स्त्री मुक्ति की चेतना और मीरा का काव्य

पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
के कला संकाय के अंतर्गत हिंदी विषय में
पी-एच.डी. उपाधि के पंजीयन हेतु
प्रस्तुत
शोध–प्रबंध की रूपरेखा

सत्र : 2016–17

शोध–निर्देशक
डॉ. फिरोजा जाफ़र अली
सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सेक्टर–7 भिलाई नगर,
जिला दुर्ग, (छ.ग.)

डॉ. फिरोजा जाफर अली
सहायक प्राध्यापक
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भिलाई नगर (छत्तीसगढ़)

Meenakshi
शोधार्थी
मीनाक्षी राय
हिंदी विभाग
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सेक्टर–7 भिलाई नगर,
जिला दुर्ग, (छ.ग.)

PRINCIPAL
Kalyan Post Graduate College
Bhilai Nagar (C.G.)

शोध–केंद्र
हिंदी विभाग, कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भिलाई नगर, जिला दुर्ग (छत्तीसगढ़)

स्त्री मुक्ति की चेतना और मीरा का काव्य

1. प्रथम अध्याय – **मीराबाई का जीवन और कर्म साधना**

1.1 व्यक्तित्व

1.2 कृतित्व

1.3 मीरा की निर्मित छवि

1.4 मीरा की यथार्थ परक छवि

2 द्वितीय अध्याय – **भक्ति आंदोलन और मीरा**

2.1 भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य

2.2 मध्यकालीन समाज में स्त्री का स्थान

2.3 भारतीय वर्ण व्यवस्था और स्त्री

2.4 कृष्ण भक्ति काव्यधारा और मीरा

3 तृतीय अध्याय – **स्त्री चिंतन के संदर्भ में मीरा**

3.1 स्त्री मुक्ति आंदोलन का इतिहास

3.2 भारतीय संदर्भ में स्त्री मुक्ति की अवधारणा

3.3 मध्यकालीन स्त्री चेतना का आविर्भाव

3.4 स्त्री मुक्ति का युगीन संदर्भ और मीरा

3.5 स्त्री और स्त्री अस्मिता के प्रश्न, वर्तमान संदर्भ में

4 चतुर्थ अध्याय – **भक्ति आंदोलन और मीरा की काव्यगत चेतना**

4.1 मीरा के काव्य में स्त्री मुक्ति के स्वर

4.2 प्रेम के निहितार्थ भाव बोध और मीरा की भक्ति भावना

4.3 मीरा के काव्य में स्त्रैण भाव तत्व

4.4 दर्द की पराकष्ठा और मीरा

4.5 भक्ति आंदोलन में मीरा का स्थान

5 पंचम अध्याय – **मीरा के काव्य में चेतनात्मक दर्शन**

5.1 मीरा के काव्य में सामाजिक चेतना

5.2 मीरा के काव्य में राजनीतिक चेतना

5.3 मीरा के काव्य में आर्थिक चेतना

5.4 मीरा के काव्य में सांस्कृतिक चेतना

5.5 मीरा के काव्य में आध्यात्मिक चेतना

6 षष्ठ अध्याय – मीरा की काव्यगत संवेदना

6.1 मीरा के काव्य में आत्मनिर्भरता

6.2 प्रामाणिक काव्यानुभूति के तत्व

6.3 मीरा के काव्य की सार्थकता

6.4 मीरा के काव्य में संवेदनात्मक स्वर

उपसंहार –

परिशिष्ट –

आधार–ग्रंथ–सूची

संदर्भ–ग्रंथ–सूची

पत्र–पत्रिकाएँ

वेब–साइट्स

स्त्री मुक्ति की चेतना और मीरा का काव्य

प्रस्तावना :

भारतीय परम्परा में स्त्री चिंतन की अनवरत् धारा बहती आई है। भारतीय परम्परा की अगर चर्चा करें तो अतीत की एक सुदृढ़ और सुदीर्घ परम्परा दिखाई देती है। स्त्री चिंतन के अतीत के दोनों पक्ष दिखाई देते हैं। एक पक्ष उज्जवल पक्ष है जो स्त्री को देवी का दर्जा देता है। दूसरा पक्ष कृष्ण पक्ष है जो स्त्री को दासी मानकर दलित की श्रेणी में रखता है। हमारे आर्ष ग्रंथ नारी को धर्म, अर्थ, काम का उद्भव स्रोत मानते हैं। स्त्री चिंतन की भारतीय परम्परा वैदिक काल से ही चली आ रही है। वैदिक काल की परम्परा में स्त्री शास्त्रार्थ करती है। मध्यकाल के आते–आते स्त्रियों की दशा में क्षरण दिखाई देता है।

वर्तमान में स्त्री चिंतन स्त्री विमर्श के रूप में साहित्य के केन्द्र में हैं। स्त्री सशक्तीकरण के इस दौर में स्त्रियों की दशा और दिशा, आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता के बीच शोध का विषय है। वैदिक काल से स्त्री को चारदीवारी में कैद कर रखने की परम्परा चली आ रही है। पुरुष पर निर्भर अभिशप्त स्त्री सदैव एक प्रश्न के रूप में साहित्य और समाज के बीच उपस्थित रहती है। सैद्धांतिक रूप में देवी का दर्जा प्राप्त स्त्री परिवार और समाज के स्तर पर अव्यवहारिक ही रही है। पितृसत्तात्मक संस्थाओं की बेड़ियों में जकड़ी हुई स्त्री पराधीन जन्म लेती है और पराधीन ही मृत्यु का वरण भी करती है।

स्त्री चिंतन एक व्यापक शोध का विषय है। वर्तमान में वस्तु से व्यक्ति होती स्त्री की स्वतंत्रता संदिग्ध है। पश्चिम से आयतित स्त्री विमर्श के आड़ में स्त्री अपेक्षाकृत स्वयं के लिए अधिक स्थान की मांग करती नजर आती है। परिवार, समाज को नकारती स्त्री का उत्तर आधुनिक रूप भारतीय परम्परा के नींव को क्षतिग्रस्त कर रही है। यह सत्य है कि तत्कालीन परिस्थितियाँ साहित्य और समाज को प्रभावित अवश्य करती है। आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता के इस दौर में स्त्री विमर्श की वैचारिकी की जड़ों की ओर लौटना आवश्यक हो गया है।

हमें देखना होगा कि स्त्री विमर्श की जड़ें 'सीमोन–द–बोउवार' से कहीं आगे भी हैं?...... तो जड़ों की ओर लौटने पर यह पता चलता है कि मीरा जैसी स्त्री चेतना की संवाहिका स्त्री चेतना के मूल में मौजूद है। स्त्री चेतना के बदलते संदर्भों में मीरा प्रमुख स्त्री चिंतक के रूप में सामने आती है। स्वतंत्र अस्तित्व की चाह रखने वाली मीरा प्रथम स्त्री चिंतक के पद पर स्वमेव आसित हो जाती है।

साहित्य का मध्यकालीन इतिहास भारतीय स्त्री जागरण के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालता है। मध्यकालीन भक्त परम्परा की कवयित्री मीराबाई स्त्री जाति की जीवन स्थितियों, परिस्थितियों, स्वप्न व संवेदनाओं के पठन व प्रकाशन में अहम् भूमिका निभाती नजर आती है। मीरा के उपलब्ध रचनाओं से स्त्री पक्षीय चिंतन का पुनर्पाठ तैयार किया जा सकता है।

मध्यकालीन समाज व्यवस्था ने रूढ़ियों और संकीर्णताओं के मध्य स्त्रियों की स्वाधीनता को बाँध दिया। सामंती तंत्र में व्याप्त ऊँच–नीच के भेदभाव तथा सामाजिक नियमों के पालन के नाम पर स्त्रियों के साथ हुए अन्याय का त्रास झेल रही स्त्रियों की घुटन भरी स्थिति के मध्य मीरा ने स्त्रियों के लिए एक नये मार्ग को प्रशस्त किया है। मीरा स्वाधीन मार्ग पर चलते हुए लिंगाधारित पितृसत्तात्मक संस्कृति के सामने आत्मसमर्पण कर बिखरती नहीं हैं बल्कि जीवन भर स्वतंत्रचेता मुक्तिकामी स्त्री के लिए संघर्ष करती है।

मध्यकाल में सामंती व्यवस्था और पुरूष प्रधान विचारधारा के अधीन स्त्रियों के लैंगिक दमन और शोषण के विरोध में मीरा ने निरंतर संघर्ष किया। मीरा के काव्य में स्त्री पराधीनता की घुटन और विवशता के स्वर सुनाई पड़ते हैं। उनके काव्य में स्त्री जीवन की यथार्थता का स्पष्ट रूप दिखाई पड़ता है। मीरा के काव्य में दमित और मूल अधिकारों से वंचित स्त्री की पीड़ा, भावविकल कातरता और असंतोष इतना मुखर है कि यह मीरा की संत–भक्त स्त्री की छवि को ध्वस्त कर जागरूक स्त्री की छवि को अभिव्यक्त करता है।

मीरा ने समाज में व्याप्त अमानवीय प्रथाओं का विरोध किया और इन प्रथाओं की बेड़ियों में जकड़े हुए समाज का निडर होकर सामना किया। मध्यकालीन स्त्री

अपनी इच्छाओं को व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र नहीं थी। स्त्री का जीवन एक दासी के रूप में, भोग की वस्तु के रूप में अस्तित्वहीन था। समाज ने पुरुषों को महत्व देते हुए स्त्रियों की आत्माभिव्यक्ति के स्वर को पूरी तरह कुचल दिया था। मीरा ने उस सामाजिक व्यवस्था को चुनौती दी है जिसने मीरा को अपमानित किया, प्रचुर कष्ट दिया एवं मीरा के व्यक्तित्व को कुचलना चाहा।

मीरा का संघर्ष मध्यकालीन स्त्री का संघर्ष है। मीरा ने अपने काव्य में स्त्री का दासत्व रूप और उसकी व्यथा को दर्शाया है। उनका काव्य उस युग के सामाजिक बंधनों की कठोरता को दर्शाता है। मीरा ने इन बंधनों को तोड़ने का अदम्य साहस दिखाया है। पुरूष मत से घिरे समाज के विरूद्ध मीरा के स्वनिर्णय की भावना ने ही मीरा को साहस प्रदान किया। स्त्री मुक्ति की चेतना का बीज स्वनिर्णय की भावना है जिसे बोने के लिए मीरा ने पूर्ण जीवन संघर्ष किया है।

मीरा की रचनाएँ रूढ़िवादी समाज में आध्यात्मिक होने के साथ–साथ सामाजिक भी रही। मीरा ने अपने पदों में शोषित और अपमानित स्त्री के प्रति अथाह विकलता तथा संवेदनहीन समाज को दर्शाया है। पारंपरिक व्यवस्था, यातनाओं के विरूद्ध मीरा के स्वर ने स्त्री जीवन को एक नवीन आकृति प्रदान किया है। इस नवीन आकृति में नारी को सिर्फ देह रूप की प्रमुखता न देकर मनुष्य होने का बोध कराना है। समाज की विभिन्न परिस्थितियों को लाचार होकर सहन करने में नहीं अपितु स्वयं की बुद्धि तथा समझ से आत्माभिव्यक्ति के प्रति सजग होना है। मीरा के पदों में व्यक्त हुआ यह आत्माभिव्यक्ति का विस्तारीकरण ही मीरा को अन्य भक्त संतों से अलग श्रेणी में रखता है।

समाज की स्थिति का वर्णन कर स्त्री के मन की पीड़ा और पराधीनता के घेरे से बाहर निकलने की व्याकुलता मीरा के काव्य से पहले दिखाई नहीं पड़ती। मीरा स्वयं कुरीतियों से संघर्ष कर स्त्री अंतःकरण की व्यथा का बोध करती है और इस बोध को काव्य के रूप में प्रकट करती है। सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था से प्रतिरोध का स्वर एवं आत्मनिर्णय के अधिकार का स्वर मीरा से पहले व्यक्त नहीं हुआ है।

शोध की सीमाएँ :

प्रस्तावित शोध–शीर्षक "स्त्री मुक्ति की चेतना और मीरा का काव्य" के अंतर्गत मीरा का जीवन और कर्म साधना का परिचय देते हुए इसके अंतर्गत हिन्दी का भक्तिकाल और मीरा, स्त्री चिंतन में मीरा की भूमिका, भक्ति आंदोलन और मीरा की काव्यगत चेतना, मीरा के काव्य में चेतनात्मक दर्शन, मीरा की काव्यगत संवेदना आदि महत्वपूर्ण बिंदुओं को लेकर इसका विस्तृत और सम्यक् विवेचन करना ही इस शोध–कार्य की प्रमुख सीमाएँ है।

इस शोध–प्रबंध की सीमाओं में निम्नलिखित बिंदुओं की सम्यक् विवेचना की जाएगी।

1. मीराबाई का जीवन और कर्म साधना
2. भक्ति आंदोलन और मीरा
3. स्त्री चिंतन के संदर्भ में मीरा
4. भक्ति आंदोलन और मीरा की काव्यगत चेतना
5. मीरा के काव्य में चेतनात्मक दर्शन
6. मीरा की काव्यगत संवेदना

उपयुक्त उल्लेखित बिन्दु शोध की सीमाओं को व्यक्त करने वाले प्रमुख आधार है।

पूर्व शोध–कार्य की समीक्षा :

विवेच्य शीर्षक "स्त्री मुक्ति की चेतना और मीरा का काव्य" से पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर में मेरी जानकारी के अनुसार कोई शोध–कार्य नहीं हुआ है।

प्रस्तावित शोध–कार्य का महत्व एवं उपादेयता :

भक्तिकाल की सामाजिक पृष्ठभूमि में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। राजनीतिक दशा की विषमताओं के प्रभाव से समाज के व्यवहार में बदलाव आ जाता है। मीरा में बाधक स्थितियों को पार करने की प्रबल इच्छा थी। उन्होंने अपने काव्य में सामान्य नारी स्थिति की भावनाओं का चित्रण अत्यंत सहजता के साथ किया है। मध्यकाल में स्त्रियों को पुरूषों की अपेक्षा हीन समझा जाता था। जन्म के उपरांत मृत्यु तक स्त्रियाँ पुरूषों के अधीन ही रहती थी। स्त्रियों की दयनीय स्थिति के लिए मध्यकाल की क्रूर प्रथाएँ उत्तरदायी है। इन प्रथाओं में सती प्रथा एक हृदयविदारक प्रथा है जिसमें विधवा स्त्री को जीवित अवस्था में ही अपने मृत पति की देह के साथ जलना पड़ता था। विधवा स्त्री द्वारा इस प्रथा को मानने से इंकार करने पर उसे समाज में अपमानित होना पड़ता था तथा संकटों का सामना कर जीवन व्यतीत करना पड़ता था। सती न होने पर उस विधवा स्त्री को समाज घृणा की दृष्टि से देखता था। समाज में ऐसी स्त्रियों को लंबे केश रखने की अनुमति नहीं थी। श्रृंगार, अच्छे वस्त्र तथा आभूषणों को भी धारण करने की स्वतंत्रता नहीं थी। विधवाओं को विवश किया जाता था कि वो सती प्रथा का पालन करें। विधवाओं के पास दो ही विकल्प था– विधवा स्त्री सारा जीवन वैधव्य नियमों का पालने करते हुए बिताये या मृत पति की चिता के साथ जीवित जल जाये। सती होना या जौहर करना एक प्रथा बन चुकी थी। इस प्रथा का प्रचलन राजस्थान तथा समाज के उच्च वर्ग में अधिक था।

मीरा ने मध्यकालीन सामंती व्यवस्था की बेड़ियों में जकड़े हुए समाज का निडर होकर सामना किया। मीरा ने सामंती समाज की प्रथाओं का विरोध किया। सामंती व्यवस्था में नैतिकता की अत्यंत कमी थी। इस व्यवस्था में स्त्री को वस्तु की श्रेणी में रखा जाता था। स्त्री और भूमि को समान दृष्टि से देखा जाता था। स्त्री का उपयोग धन की तरह किया जाता था। मध्यकालीन स्त्री अपनी इच्छाओं को व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र नहीं थी। स्त्री का जीवन एक दासी के रूप में, भोग की वस्तु के रूप में अस्तित्वहीन था। सामंती संस्कृति में नारी को घर से बाहर निकलने की भी अनुमति नहीं थी। जिस पुरुष प्रधान समाज ने भारतीय नारी की

आत्माभिव्यक्ति के स्वर को पूरी तरह कुचल दिया था, उसी पुरूष प्रधान समाज को मीरा अपने पदों में ललकारती है। मीरा ने उस सामाजिक व्यवस्था को चुनौती दी जिसने मीरा को अपमानित किया, प्रचुर कष्ट दिया एवं मीरा के व्यक्तित्व की स्वतंत्रता को कुचलना चाहा। मीरा के काव्य में मुक्ति की सजगता प्रेम के द्वारा अभिव्यक्त होती है। मीरा के भक्ति काव्य का केंद्र बिन्दु प्रेम है और इस प्रेम को व्यक्त करने के लिये किसी सहारे की आवश्यकता नहीं है। मीरा की शक्ति 'दृढ़ संकल्प' तथा 'प्रेम' शब्द है। प्रेम में अभिभूत होकर मीरा श्रीकृष्ण के सम्मुख स्वयं को समर्पित करती है और इस समर्पण से मीरा का आत्मविश्वास बढ़ता है। यह आत्मविश्वास ही मीरा को प्रेम के पथ पर चलकर अपने दृढ़ संकल्प को पूर्ण करने में सहयोग देता है। मीरा ने एक स्त्री, एक बेटी, एक बहू और एक विधवा के रूप में जीवन पर्यन्त संघर्ष ही किया है। कुलनाशी, कलंकिनी, चरित्रहीन स्त्री का लांछन भी मीरा को रूढ़िवादी समाज के विरूद्ध सजगता लाने के संकल्प से विचलित न कर सका। मीरा लोक—लाज, निंदा, चर्चा की परवाह किए बगैर अपने प्रेम को सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करने के लिए संघर्ष करती रही। परिवार तथा समाज से लगातार तिरस्कार सहती हुई मीरा भक्ति के पथ पर निर्भीक होकर आगे बढ़ती रही।

मीरा ने अपनी स्वतंत्रता एवं अस्मिता के लिए जीवन भर संघर्ष किया है। मीरा का संघर्ष मध्यकालीन स्त्री का संघर्ष है। मीरा ने अपने काव्य में स्त्री का दासत्व रूप और उसकी व्यथा को दर्शाया है। उनका काव्य उस युग के सामाजिक बंधनों की कठोरता को दर्शाता है। इसी सामाजिक बंधनों के विरोध में मीरा बगावत करती है। मीरा के सामाजिक सजगता से जुड़े पदों में स्त्री मुक्ति की चेतना का स्वर हिंदी आलोचना के क्षेत्र में उपेक्षित रह गया है। हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक जैसे – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, नंद दुलारे बाजपेयी, डॉ. रामविलास शर्मा तथा डॉ. नगेन्द्र, डॉ. नामवर सिंह आदि आलोचकों ने अपने आलोचना के क्षेत्र में मीरा को उपेक्षित ही रखा है। मीरा के पदों में एक सजग नारी का विद्रोही स्वर सुनाई पड़ता है। जो समाज की प्रथाओं को चुनौती देती है।

हिंदी साहित्य में सर्वप्रथम मीरा के काव्य में ही स्त्री मुक्ति की चेतना का स्वर सुनाई पड़ता है। मध्यकाल के पुरूष वर्चस्व समाज में मीरा ने निश्चय ही स्त्री की सीमाओं को तोड़ा था। मीरा द्वारा स्वाधीन मार्ग पर चलने की तथा अपने अस्तित्व की पहचान के लिए किया गया संघर्ष ही मीरा को आधुनिक स्त्री मुक्ति की चेतना से जोड़ता है। मीरा के काव्य में दयनीय, शोषित और अपमानित स्त्री के प्रति अथाह बेचैनी है। मीरा के पदों में नारी के साथ हुए अन्याय तथा संवेदनहीन समाज के प्रति विद्रोह भरा है। मीरा स्वतंत्र चेतना की मुक्ति कामना करते हुए विरोधियों को चुनौती देती है।

शोध–कार्य की प्रस्तावित अनुसंधान–प्रविधि :

प्रस्तुत शोध–शीर्षक "स्त्री मुक्ति की चेतना और मीरा का काव्य" को गहन अध्ययन का विषय बनाकर उसके संदर्भित आंतरिक एवं बाह्य साक्ष्यों के आधार पर स्त्री चिंतन में मीरा की भूमिका का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाना प्रस्तावित है। स्त्री चिंतन की परम्परा में मीरा की भूमिका को सिद्ध करते हुए स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में शोध–शीर्षक के महत्व को वर्णित किया जाएगा।

प्रस्तुत शोध विषय में पुस्तकालय, आधार–ग्रंथ, संदर्भ–ग्रंथ तथा पत्र– पत्रिकाओं की सहायता लेते हुए तथ्यात्मक अनुसंधान, भावानुसंधान, विचारानुसंधान, प्रवृत्तिमूलक अनुसंधान प्रणाली के द्वारा शोध के उद्देश्यों तक पहुँचने का प्रयास किया जायेगा। यथा –

1. विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध ग्रंथों, शोध–ग्रंथों एवं शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित संबंधित शोध सामग्री का अन्वेषण।
2. समाचार–पत्रों में लेखकों एवं उनकी शोध परख प्रकाशित आलेखों का पठन एवं अन्वेषण।
3. वेबसाइट, ब्लॉग आदि में उपलब्ध संबंधित सामग्री का अवलोकन, अध्ययन एवं अन्वेषण।
4. स्त्री चिंतन के परम्पराओं के आधार पर ऐतिहासिक तथा तथ्यात्मक अनुसंधान।

5. मीरा के काव्य का भावानुसंधान।

6. स्त्री चिंतन पर आधारित विभिन्न विचारों का विचारानुसंधान।

7. शोध–शीर्षक पर शोध–शीर्षक से संबंधित विभिन्न अनुसंधान की प्रवृत्तियों के आधार पर प्रवृत्तिमूलक अनुसंधान।

8. देश की महत्वपूर्ण पुस्तकालयों में उपलब्ध ग्रंथों एवं पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित संबंधित सामग्री का अन्वेषण।

9. प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त ग्रंथों पर आधारित शोध परख विवेचन।

10. स्त्री चिंतन की परम्परा को तत्कालीन साहित्य एवं समाज की परिस्थितियों पर आकलन।

11. देश के प्रमुख स्त्री विमर्शकारों से स्त्री चिंतन पर प्रश्नोत्तर एवं साक्षात्कार।

प्रस्तावित शोध–कार्य के संभावित निष्कर्ष :

प्रस्तावित शोध शीर्षक में मैंने स्त्री चिंतन की परम्परा में मीरा की अहम् भूमिका को प्रतिपादित करने का प्रयास किया है। स्त्री सशक्तीकरण के वर्तमान दौर में प्रमुख स्त्री विमर्शकारों के पूर्व स्त्री चिंतन में मीरा प्रथम स्त्री चिंतक के रूप में सामने आती है। मीरा श्रीकृष्ण के प्रति अटूट भक्ति के कारण जितनी लोकप्रिय हुई उतनी अपने समय के सामंतवाद, कुलीन रीति–रिवाज, पुरूष वर्चस्व आदि के विरूद्ध खड़ी होने वाली एक स्त्री चिंतक के रूप में भी जानी जाती है। चूँकि अपेक्षाकृत रूप से मीरा तत्कालीन समाज में शोषित, प्रताड़ित स्त्री के रूप में जानी जाती रही। स्त्री चिंतक की उनकी भूमिका को बाद के समाज ने रेखांकित करना प्रारंभ किया। आधुनिक काल में साहित्य के केंद्र में स्त्री विमर्श के आने के बाद स्त्री चिंतन की परम्परा में मीरा की भूमिका का चिन्हांकन समय की माँग है। भक्त कवयित्री के रूप में प्रतिष्ठित मीरा की कविताओं में भक्ति के अतिरिक्त स्त्री चिंतन का ऐसा ब्रम्हत्व सम्मिलित है जो उन्हें न केवल भक्त कवियों से अलग करता है बल्कि स्त्री चिंतन के आधारगत पृष्ठभूमि पर एक अलग पहचान देता है। तत्कालीन समाज स्त्री की स्थिति का मूल्यांकन तो करता ही है साथ ही साथ स्त्री की स्थिति का पुनर्मूल्यांकन भी समाज करता है। पुरूष प्रधान समाज के द्वारा निर्धारित अपने

दोयम दर्जे के पद को नकारती स्त्री अपने अधिकार और कर्तव्य स्वयं तय करना चाहती है। स्वयं के लिए तय किए गए अनुशासन के नियमों को संशोधित करना चाहती है। स्त्री नैतिकता के प्रतिमानों को पुनर्परिभाषित करना चाहती है। ऐसे समय में स्त्री चिंतक के रूप में मीराबाई का जीवन न केवल साहित्य का विषय है बल्कि यह समाजशास्त्रीय अध्ययन तथा मनोवैज्ञानिक अध्ययन का भी विषय है।

स्त्री विमर्श और स्त्री सशक्तीकरण को समझने से पहले स्त्री चिंतन की प्रमुख मीरा के स्त्री चिंतन को समझना आवश्यक है। मीरा के रचनाओं में अंतर्निहित स्त्री चेतना के सामाजिक एवं साहित्यिक भावों का अध्ययन मेरे अनुसंधान का विषय तो है ही साथ ही साथ मीरा के रूढ़िबद्धता के विरूद्ध खड़े होने की क्षमता, परिवार और समाज से विमुखता, स्त्रियोचित दाम्पत्य भावों से विरक्ति, खुशहाल और सुरक्षित जीवन के प्रति निर्णायक भावों की मनोवैज्ञानिक पड़ताल करने का प्रयास करना भी है।

हिंदी के भक्त कवियों की सुदीर्घ परम्परा में मीरा ही एक ऐसी स्त्री है जो राजसी सुख–सुविधाओं को त्याग कर दीन–हीन, पिछड़े लोगों के साथ उठती–बैठती है। उन्हें अपने समकक्ष मानकर सखा रूप में, उनके सुख–दुख में सम्मिलित होती है। मीरा का स्त्री चिंतक रूप भूमण्डलीकरण के इस दौर में और अधिक प्रासंगिक हो गया है। आज जब पूर्व और पश्चिम का भेद मिटने लगा है, संस्कृतिकरण के बजाय पश्चिमीकरण अधिक हो रहा है ऐसी स्थिति में स्त्रियों की दशा और दिशा को निर्धारित करने में मीरा के स्त्री चिंतन की अहम् भूमिका हो सकती है। परसंस्कृतिकरण के इस दौर में मीरा की प्रासंगिकता और अधिक हो जाती है। वर्तमान में मीरा के स्त्री चिंतन पर शोध स्त्री विमर्श के लिए सही दिशा निर्देशन का काम कर सकती है।

आधार–ग्रंथ–सूची

1 चोपड़ा, सुदर्शन. मीरा. नई दिल्ली : सरस्वती विहार, प्रथम संस्करण, 2008.

2 चतुर्वेदी, परशुराम. मीराबाई की पदावली. इलाहाबाद : हिंदी साहित्य सम्मेलन, बाइसवाँ संस्करण, 2008.

3 'शबनम', पद्मावती. मीरा–वृहत्–पद–संग्रह. काशी : लोक–सेवक प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2009.

4 शर्मा, रामकिशोर. मीराबाई की सम्पूर्ण पदावली. इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2012.

5 शेखावत, कल्याण सिंह. मीरा ग्रंथावली. नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2008.

6 बुधानंद, स्वामी. मीरा की प्रेमोपासना. कोलकाता : अद्वैत आश्रम, प्रथम संस्करण, 2010.

संदर्भ–ग्रंथ–सूची

1. पल्लव. मीरा : एक पुनर्मूल्यांकन. हरियाणा : आधार प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2015.
2. श्रीवास्तव, शिवशंकर. मुगलकालीन उत्तर भारत. इलाहाबाद : साहित्य संगम, प्रथम संस्करण, 2008.
3. नगेन्द्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास. नयी दिल्ली : मयूर पेपरबैक्स, तृतीय संस्करण, 2009.
4. खण्डेलवाल, जयकिशन प्रसाद. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ. आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स, पचीसवाँ संस्करण, 2013–14.
5. त्रिपाठी, विश्वनाथ. मीरा का काव्य. नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2015.
6. संगारी, कुमकुम. मीराबाई और भक्ति की आध्यात्मिक अर्थनीति. नयी दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2012.
7. नीलोत्पल. मीरा पदावली. नयी दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2011.
8. अपूर्वानन्द, स्वामी. स्वामी विवेकानंद : संक्षिप्त जीवनी तथा उपदेश. नागपुर : रामकृष्ण मठ, तेरहवाँ संस्करण, 2004.
9. गोस्वामी, सुधा. भारतवर्ष की चर्चित महिलाएँ. आगरा : उपकार प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2003.
10. कुमार, राकेश. नारीवादी विमर्श. हरियाणा : आधार प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2011.
11. के.पी., प्रमीला. स्त्री–अध्ययन की बुनियाद. नयी दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2015.

12. मिश्र, सभापति. हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास. इलाहाबाद : जयभारती प्रकाशन, तृतीय संस्करण, 2009.

13. मिश्र, शिवकुमार. भक्ति–आंदोलन और भक्ति–काव्य. इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1982.

14. वर्मा, रामकुमार. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. इलाहाबाद : साहित्य भवन प्रा. लि., प्रथम संस्करण, 1992.

15. सिंह, विजयपाल. हिंदी साहित्य का इतिहास. इलाहाबाद : जयभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2013.

पत्र–पत्रिकाएँ

1. छत्तीसगढ़ – विवेक – त्रैमासिक शोध– पत्रिका, संपादक–आर.पी.मिश्रा, सहसंपादक– डॉ. सुधीर शर्मा
2. चौपाल – साप्ताहिक परिशिष्ट, दैनिक हरिभूमि, रायपुर
3. मड़ई – साप्ताहिक परिशिष्ट, दैनिक हरिभूमि, रायपुर
4. साप्ताहिक परिशिष्ट, दैनिक हरिभूमि, रायपुर
5. रिसर्च जनरल शोध प्रकल्प रायपुर, संपादक– डॉ. सुधीर शर्मा
6. सर्जना त्रैमासिक, संपादक – रामहृदय तिवारी
7. छत्तीसगढ़ी लोकाक्षर, संपादक – नंदकिशोर तिवारी
8. चौमासा, संपादक–रामनारायण उपाध्याय
9. 'सापेक्ष ' संपादक – कमल कोठारी
10. हंस, संपादक–राजेन्द्र यादव
11. आलोचना, संपादक–अरूण कमल
12. नया ज्ञानोदय, संपादक–रवीन्द्र कालिया
13. कथा देश, संपादक – हरिनारायण
14. अक्षर पर्व, संपादक – सर्वमित्रा सुरजन
15. साहित्य अमृत, संपादक – त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी
16. मड़ई, सम्पादक – डॉ. कालीचरण यादव
17. समीक्षा, संपादक –सत्यकाम
18. वसुधा, संपादक – स्वयं प्रकाश
19. साखी, संपादक – सदानंद शाही।

वेब साइट्स

1. www.kavitakosh.org
2. www.MAANAVTA.COM
3. www.chittorgarh.com/meera.bai
4. www.contributoria.com
5. www. poemhunter.com
6. www.youthkiawaaz.com
7. www.gyanipandit.com/meera.bai.in
8. www. geni.com
9. www. wikipedia.org
10. www.bharatdarshan.co.in

शोध–निर्देशक
डॉ. फिरोजा जाफ़र अली
सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भिलाई नगर, जिला दुर्ग, (छ.ग.)

डॉ. फिरोजा जाफ़र अली
सहायक प्राध्यापक
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भिलाई नगर (छत्तीसगढ़)

Meenakshi
शोधार्थी
मीनाक्षी राय
हिंदी विभाग
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भिलाई नगर, जिला दुर्ग, (छ.ग.)

PRINCIPAL
Kalyan Post Graduate College
Bhilai Nagar (C.G.)
प्राचार्य
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भिलाईनगर, छत्तीसगढ़